International Journal of Education and Science Research
Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-7, Issue-5 October- 2020, P-ISSN 2348-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

वर्तमान समय के विद्यालयों में पुस्तकालयों की आवश्यकता एवं महत्त्व

[1]Kanti Singh Kathed, [2]Dr.S.B.Kulshrestha
[1]Research Scholar, [2]Supervisor
Career Point University
Kota, Rajasthan

सार–
शिक्षा–शिक्षा तथा मानव जाति का जन्म–जन्मान्तर का सम्बन्ध है तथा मानव विकास का मूल साधन है, जो मनुष्य को जीवन में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है तथा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों को विकसित करती है। शिक्षा एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जो गर्भावस्था से मृत्यु पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जिससे मनुष्य के ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं विकास तथा व्यवहार में परिवर्तन होता है। शिक्षा ही उसे सभ्य, सुसंस्कृत तथा योग्य नागरिक बनाती है तथा जीवन में आने वाली समस्याओं को सुलझाने में सहायता करती है। मानवीय जीवन के बोद्धिक एवं सांस्कृतिक तत्व ही मनुष्य को पशुओं से भिन्न बनाती है, मानव जाति का संरक्षण व बोद्धिक विकास करती है। यही सांस्कृतिक परम्पराओं को बनाए रखने में तथा युगों–युगों से इतिहास की देन को विकसित करने में सहायता करती है। शिक्षा एक विस्तृत प्रक्रिया भी है, जो मनुष्य को अंधकार, गरीबी तथा जीवन में आने वाले संकटों से बाहर निकालती है तथा व्यक्तित्व के सभी पक्षों शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा अध्यात्मिक विकास करती है, जिसके परिणाम स्वरूप मनुष्य साधन युक्त तथा जागरूक नागरिक बन जाता है। अतः अधिक ज्ञान प्राप्त करने तथा स्वयं की ज्ञान–पिपासा शांत के लिए शिक्षक तथा विद्यार्थी के लिए विद्यालय में पुस्तकालय होना अनिवार्य है।

प्रस्तावना–
पुस्तकालय–पुस्तकालय शब्द 'पुस्तक़आलय' इन दो शब्दों से निष्पन्न होता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है–पुस्तकों का घर। इसको को विद्यालय का ह्रदय माना जाता है। जिस प्रकार किसी भी प्राणी का सम्पूर्ण शरीर ह्रदय पर आधारित होता है, ठीक उसी प्रकार विद्यालय के सभी शैक्षिक कार्य भी पुस्कालय पर आधारित होते हैं। अतः पुस्तकालय को विद्यालय का महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है। शिक्षकों का भी मत है कि पाठ्य–पुस्तकों द्वारा सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती वरन उसकी पूर्ति अन्य उपयोगी पुस्तकों से होती है। अद्यत्व पुस्तकालय को विद्यालय की बोद्धिक प्रयोगशाला के रूप में स्वीकार किया गया है, जिसके द्वारा विद्यार्थियों में पठन–पाठन की रूचि ही उत्पन्न नहीं होती अपितु व्यक्तिगत एवं सामूहिक योजनाओं, साहित्यिक ज्ञान, प्रिय–क्रियाओं तथा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं को पूर्ण करने के लिए सहायता प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त इसके द्वारा प्रगतिशील शिक्षण–पद्धतियों का ज्ञान भी प्रदान किया जाता है।

वारबरा रूठ ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि 'पुस्तकालय ज्ञान को सुरक्षित रखते हैं, ताकि कुछ भी खो न जाए। ज्ञान को संगठित रखते हैं ताकि कुछ व्यर्थ न चला जाए और ज्ञान को प्राप्य बनाते हैं, ताकि कोई उससे वंचित न रहे।'

माध्यमिक शिक्षा आयोग के शब्दों में, 'पुस्तकालय बुद्धिजीवियों का केन्द्र होगा और पुनर्गठित विद्यालय का साहित्यिक जीवन होगा तथा अन्य विषयों के लिए वही भूमिका प्रयोगशाला विज्ञानशाला के लिए निभाती है, या कार्यशाला तकनीकी उद्देश्यों के लिए निभाती है।'

पुस्तकालय के सन्दर्भ में मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन ने ब्रिटेन पुस्तकालय के सन्दर्भ में स्पष्ट वक्तव्य दिया कि 'अध्यापक के कार्य तथा प्रभाव के अतिरिक्त भी पुस्तकालय एक मुख्य साधन है। अध्यापक के पास जो शिक्षा के अन्य साधन हैं, उसमें पुस्तकालय असंदिग्ध रूप से मुख्य है और यदि किसी बच्चे में पुस्तकों के अध्ययन के प्रति रूचि तथा प्यार उत्पन्न कर दिया जाए तो बच्चे के लिए ऐसे असंख्य मार्ग खुल जाते हैं, जिन पर चल कर वह मानवीयज्ञान तथा रूचि उत्पन्न करने के लिए पुस्तकालय महत्त्वपूर्ण है।'

अतः पुस्तकालय के बिना किसी भी विद्यालय की प्रतिष्ठा ऊँची नहीं मानी जा सकती। जिस विद्यालय में जितना सुंदर, रुचिकर तथा समृद्ध पुस्तकालय होगा वह उतना ही उत्तम माना जा सकता है। पुस्तकालय ही ज्ञान का भंडार, मित्र, मार्गदर्शक तथा गुरु होतें हैं। इससे ही विद्यार्थी अपनी भाषा, साहित्य एवं अपनी सामाजिक समस्याओं से परिचित होतें है तथा छात्रों को अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के विकास और स्वरूप से भी परिचित करातें हैं।'

वर्तमान समय में पुस्तकालयों की स्थिति

विद्यालयों में पुस्तकालय के लिए पर्याप्त स्थान

हमारे देश में अधिकांश विद्यालयों की स्थिति बड़ी शोचनीय है। अब भी ऐसे बहुत से विद्यालय हैं, जिनके पास नाममात्र के पुस्तकालय हैं। इस सम्बन्ध में माध्यमिक शिक्षा आयोग के शब्द उल्लेखनीय हैं 'अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों में सामान्यतः प्राचीन, पिछड़ी हुई, अनुपयुक्त तथा छात्रों की अभिरुचियों को ध्यान में न रखकर चयन की हुए पुस्तकें हैं, जिनको अलमारियों में रखकर बंद कर दिया गया है। अलमारियाँ अनुपयुक्त एवं अनाकर्ष कक्ष में रख दी गई हैं। पुस्तकालय जिन व्यक्तियों के अधीन हैं, वे या तो क्लर्क हैं या शिक्षक हैं, जो अंशकालिक आधार पर एस कार्य को करते हैं, जिनकी इस कार्य में रूचि नहीं है, न ही उनको पुस्तकों से प्रेम है और न ही पुस्तकालय रीतियों का ज्ञान है। इसलिए स्वभावतः वहाँ सुव्यवस्थित पुस्तकालय नाम की कोई वस्तु नहीं है, जो बालकों को अध्ययन करने तथा उनमें पुस्तकों के प्रति रूचि जाग्रत कर सके।"

पुस्तकालय की आवश्यकता एवं महत्त्व

पुस्तकें ही मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ मित्र हैं। इनके अध्ययन से मनुष्य के ज्ञान में निरंतर वृद्धि होती है तथा मनुष्य किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व, इतिहास, सभ्यता तथा संस्कृति, राजनीति, धार्मिक एवं आर्थिक स्थिति के बारे में ज्ञान होता है। इनसे ही विद्यार्थी, शिक्षक तथा मनुष्य अपनी जिज्ञासा को शांत करते हैं। मनुष्य स्वयं के अनुभव के साथ–साथ दूसरों के अनुभव से भी सीखता हैं। पुस्तकों द्वारा ही ज्ञान का संचय, प्रचार तथा प्रसार होता है। जहाँ एक बड़े कमरे में अधिक संख्या में पुस्तकें रखी जाती हैं, उसे पुस्तकालय कहते हैं। ये विद्यालय–पुस्तकालय, ग्राम–पुस्तकालय, जिला–पुस्तकालय, राज्य–पुस्तकालय, राष्ट्रीय–पुस्कालय तथा अंतर्राष्ट्रीय– पुस्तकालय के नाम से जाने जाते हैं। आज का युग ज्ञान–विज्ञान का युग है, अतः विद्यार्थियों में अधिक ज्ञानार्जन हेतु 'विद्यालय–पुस्कालय' की आवश्यकता है। पुस्तकलय का महत्त्व केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग के शिक्षित वर्ग के लिए आवश्यक है, क्योकिं पुस्तकलय ही ज्ञान का प्रवेश द्वार तथा ज्ञान का भंडार है। यह विकास का साधन तथा ऐसा समृद्ध झरना है, जो शिक्षा एवं संस्कृति के विस्तृत क्षेत्र का सिंचन करता है। यह विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के बोद्धिक विकास में सहायक होता है, रचनात्मक व सृजनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करता है तथा विभिन्न प्रकार की सूचनाएं प्रदान करता है।

विद्यालय पुस्तकालय के उद्देश्य

- अध्ययन के लिए वातावरण तैयार करना।
- विद्यार्थियों को बौद्धिक कार्य के लिए प्रेरित करना।
- विद्यार्थियों में परस्पर सहयोग की भावना का विकास करना।.
- विद्यार्थियों के शब्दकोश में वृद्धि करना।
- शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि करना।.
- शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की ज्ञान जिज्ञासा को शांत करना।
- विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में सहायता प्रदान करना।.
- विद्यार्थियों को लाभकारी व स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करना।

पुस्तकालय की साज–सज्जा

एक उत्तम पुस्तकालय निर्माण के लिए सर्वप्रथम उचित एवं पर्याप्त स्थान की आवश्यकता होती है। विद्यालय निर्माण के समय पुस्कालय बनाने का ध्यान न रहने पर उसे एक बड़े कमरे में व्यवस्थित करना चाहिए, जहाँ

पुस्तकालयाध्यक्ष, शिक्षक तथा विद्यार्थियों को पठन क्रिया में समस्या न हो। जहाँ तक हो सके पुस्तकालय विद्यालय के मध्य में स्थित होना चाहिए। इसमें प्राकृतिक व कृत्रिम प्रकाश का प्रबंध होना चाहिए। इसमें ग्रीष्म–ऋतु के अनुकूल पंखों अथवा कूलरों की व्यवस्था होनी चाहिए। इसके चारों ओर का वातावरण शांत हो। इसके साथ ही विद्यार्थियों के पढ़ने लिए एक अध्ययन–कक्ष होना चाहिए, जिसका एक दरवाजा पुस्कालय में जाने के लिए हो। इसके अतिरिक्त पुस्तकालयाध्यक्ष का भी अलग से एक कक्ष होना चाहिए। पुस्तकों को रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में अलमारियाँ दीवारों में व्यवस्थित हों तो उत्तम होगा, क्योंकि पुस्तकालय में पुस्तकें लेने, रखने तथा आने–जाने में कोई समस्या न हो। पुस्तकालय आकर्षक स्थान पर बनाना चाहिए। इसको स्वच्छता व सुन्दरता प्रदान करनी चाहिए, जिससे यह विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को अपनी ओर आकर्षित कर सके। इसकी साज–सज्जा के लिए विद्यार्थिओं का सहयोग भी लिया जा सकता है। एक उत्तम पुस्तकालय में पुस्तकों व पत्र पत्रिकाओं के अतिरिक्त निम्नलिखित साज–सज्जा भी अनिवार्य रूप से होनी चाहिए–

- विद्यार्थियों के लिए पढ़ने के लिए मेज होनी चाहिएँ। इनका आकार 4 फुट गुना में 6 फुट होनी चाहिए। इनकी ऊँचाई विद्यार्थियों के अनुसार होनी चाहिए।
- विद्यार्थियों के बैठने के लिए कुर्सियाँ भी होनी चाहिएँ। इनका अनुपात मेजों के अनुसार हो।
- मैगजीन स्टैंड, समाचार–पत्र व पत्र–पत्रिकाओं के रैक भी होने चाहिए।
- पुस्तकाल्याध्यक्ष के लिए कुर्सी–मेज भी होनी चाहिए।
- काउंटर, दीवार–घड़ी व सूचना पट्ट भी होना चाहिए।
- विषयानुसार पुस्तकों के लिए अलमारियाँ भी हीनी चाहिएँ।

पठनीय–सामग्री का चयन

पुस्तकलय में पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पठनीय–सामग्री का चयन करते समय विद्यार्थियों की रूचि के बारे में भी जान लेना आवश्यक है, परन्तु इनमें इतनी सूझ–बूझ नहीं होती। अतः पठनीय सामग्री की उपयुक्तता का निर्णय प्रधानाचार्य व अन्य शिक्षक भी कर सकते हैं। पुस्तकालय विद्यालय के प्रत्येक विभाग, विषय, क्रियाओं और विद्यार्थियों की आवश्यकता की पूर्ति करता हो। पुस्तकालय में पुस्तकों, समाचार–पत्रों व पत्रिकाओं का चयन करते समय विद्यार्थियों की आयु व रूचि साथ–साथ शिक्षकों की रॉय लेनी चाहिए। विषय से सम्बन्धी पुस्तकें, सन्दर्भ पुस्तकें, कहानी–संग्रह तथा विभिन्न कलाओं से सम्बन्धित विश्व साहित्य की सर्वोत्तम पुस्तकें विद्यार्थियों में अच्छी आदतें, मानवीयगुण, उत्तम नागरिक और समाजिक आदर्शों का विकास करने वाली पुस्तकों का चयन करना चाहिए।

पुस्तकालयाध्यक्ष और उसके कार्य

विद्यालय को अच्छा बनाने में जितनी भूमिका प्रधानाचार्य और अन्य शिक्षकों की होती है, उतनी ही भूमिका पुस्तकालय को अच्छा बनाने में पुस्तकालयाध्यक्ष की होती। पुस्तकालयों में सभी विषयों की पुस्तकें तथा पठनीय सामग्री होने पर यदि उसको चलाने वाला नहीं है तो ऐसे पुस्तकालय का कोई लाभ नहीं। पुस्तकालय की सफलता कुशल पुस्तकालयाध्यक्ष पर निर्भर करती है। अतः एक प्रशिक्षित, योग्य और कुशल पुस्ताकल्याध्क्ष की पूर्ण समय के लिए नियुक्ति आवश्यक है। अतः उसका वेतन व सभी शर्तें अन्य शिक्षकों के समान होनी चाहिएँ, क्योकिं उसका कार्य अन्य शिक्षकों से भी बढ़कर है। सभी उनसे सहयोग, उत्साह, चातुर्य, सहयोग, समायोजन, शांत–स्वभाव तथा मिलनसार जैसे गुणों की अपेक्षा करते हैं, क्योकिं वह एक शिक्षण संस्था में व्यावसायिक और प्रशासकीय दोनों प्रकार के कार्य करता है तथा प्रत्येक विद्यार्थी की रूचि के अनुसार पठनीय सामग्री उपलब्ध करवाने में सहायता करता है। पुस्तकालय के अधिक से अधिक उपयोग के लिए निम्नलिखित सिद्धांत का निर्माण करना चाहिए

- सूचनापट पर पुस्तकों के शीर्ष पत्र, अध्ययन–सामग्री की सूची और अन्य रोचक सामग्री प्रदर्शित की जाए।
- अलमारियों पर उनकी विषय–सामग्री की सूची लगानी चाहिए।
- विभिन्न महत्त्वपूर्ण प्रकरणों पर पुस्तकों की सूची तैयार करके इसके प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाए।
- पुस्तकों का, समाचार–पत्र तथा पत्र–पत्रिकाओं का वर्गीकरण करना और उनका लेखा–जोखा रखना।

- विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को उत्तम पुस्तको की जानकारी के लिए विभिन्न ढंग के लिए प्रचार करना।
- विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए पठनीय सामग्री देना तथा इसको रजिस्टर में लिखना।
- विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों के लिए अच्छी पुस्तकों की सूची तैयार करना व उपलब्ध कराना।
- नई पुस्तकें आने पर उनके शीर्ष पृष्ठों को सुचनापट्ट पर लगवाना।

निष्कर्ष

शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान होता है, यही उसे पशु से अलग करती है तथा व्यवहार में परिवर्तन करके सर्वांगींण विकास करती है। शिक्षा आदान–प्रदान करने में तथा दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान करने में सहायता करती है। यह सब पुस्तकों से ही सम्भव है। अतः पुस्तकों के संग्रह को ही पुस्तकालय कहते हैं। वास्तव में पुस्तकालय और शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यही शिक्षक, विद्यार्थी तथा अन्य सभी मनुष्यों की जिज्ञासा को शांत करता है। यह विद्यालय का महत्वपूर्ण अंग तथा हृदय है। यहाँ विद्यार्थी तथा शिक्षक अपने अनुभव, समस्याएँ तथा प्रश्न लेकर आते हैं और इन पर विचार विमर्श करते हैं तथा दूसरे के अनुभवों तथा संगृहीत पुस्तकों की सहायता से स्वयं की जिज्ञासा को शांत करते हैं तथा नवीं ज्ञान की खोज करते हैं। अद्यत्व शिक्षकों का भी मत है कि सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्ति के लिए पाठ्य–पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य उपयोगी पुस्तकों की सहायता लेनी चाहिए। अतः अधिकाधिक ज्ञान–प्राप्ति तथा ज्ञान–जिज्ञासा को शांत करने के ली पुस्तकालय की अत्यधिक आवश्यकता एवं महत्त्व है क्योंकि पुस्तकालय ही ज्ञान का भंडार होते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. एस0 आर0 रंगनाथन : पुस्तकालय विज्ञान की भूमिका, अनुवादक उमेश दत्त शर्मा, बम्बई एशिया पब्लिशिंग हाऊस, 1962, पृ0 94
2. एस.गुप्ता, जे.सी.अग्रवाल–विद्यालय प्रबन्धन–शिप्रा पब्लिकेशन विकास मार्ग, शक्करपुर दिल्ली।
3. केदारनाथ सिंह यादव, रामजी यादव–विद्यालय प्रबंधन–अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, प्रहलाद गली अंसारी रोड़, दरियागंज नई दिल्ली।
4. मुरलीधर मिश्रा अध्यापक शिक्षा में छात्राध्यापकों द्वारा उपलब्ध पुस्तकालीय सुविधाओं का गुणवत्तापरक उपयोग – एक विवेचन वनस्थली विद्यापीठ शिक्षा संकाय, विश्वविद्यालय अनुयोग की रिसर्च प्रायोजना, 2005।
5. सरस्वती, महर्षि दयानन्द (2000) ऋगवेद (हिन्दी भाष्य) नई दिल्ली, सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिध सभा।
6. डॉ. रजनी जोशी–विद्यालय प्रशासन एवं संगठन–शारदा पुस्तक भवन प्रकाशक एवं वितरक 11 यूनिवर्सिटी रोड़, इलाहबाद।
7. डॉ.एस.यादव.–सुधा यादव, माध्यमिक शिक्षा और स्कूल प्रबन्ध–टंडन पब्लिकेशन बुक्स मार्केट लुधियाना।
8. डॉ.के.सी.जैन, शैल जैन–माध्यमिक शिक्षा और स्कूल प्रबन्धन।